डेयरी उद्योग (दुग्धोत्पादन)

प्रस्तावना :–

कृषि प्रधान देश होने के कारण दुग्ध उत्पादन आज भी भारत वर्ष के गाँवों में कृषि से संबन्धित एक प्रमुख उद्यम है। गाँवों में संसाधनों की उपलब्धता के कारण ये सही भी है। नियमित आय का ये प्रमुख स्रोत हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में दिनचर्या का प्रमुख अंग है, परन्तु अब समय की मांग है कि डेयरी को एक उद्यम के रूप में लेने हेतु एक मानसिकता का सृजन करें एवं इसको व्यवसायिक स्वरूप में जीवन में उतार कर अपनी आर्थिक, समाजिक जीवन शैली एवं व्यक्तित्व में परिवर्तन लाऐं। वैज्ञानिक पद्धति एवं योजना के साथ डेयरी की व्यवसाय के रूप में अपनाने पर निस्संदेह यह एक लाभदायक व्यवसायिक क्रिया कलाप है। ज्योतिबाफूले नगर जनपद दुग्ध उत्पादन हेतु एक आदर्श स्थान है जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में दुग्ध उत्पादन करके बिना किसी विशेष परेशानी के गाज़ियाबाद एवं दिल्ली विपणन हेतु भेजा जा सकता है। ज्योतिबाफूले नगर जनपद में इस समय पशुपालन हेतु आदर्श परिस्थितियों भी उपलब्ध है जिससे दुग्ध उत्पादन को एक लाभप्रद कृषि उद्यम के रूप में अपनाया जा सकता है।

बाज़ार एवं अवस्थापना :–

दूध की बिक्री आज की परिस्थितियों में बहुत दुष्कर कार्य नहीं रह गया है, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उचित समय पर उचित मूल्य डेयरी उद्यम के उत्पादों को मिल सके। इसलिए दुग्ध उत्पादन का कार्य व्यवसायिक रूप संतोषपूर्ण है। जनपद में दूध के मुख्य बाज़ार के रूप में कई मिनीडेरियाँ, पी.सी.डी.एफ (प्रादेशिक कोआपिरेटिव डेयरी फेडरेशन) एवं प्राइवेट दूधिए कार्यरत/उपलब्ध है। ज्योतिबाफूले नगर जनपद में पी.सी.डी.एफ (पराग) की मुरादाबाद डेयरी संघ दलपतपुर द्वारा संचालित लगभग 200 सोसाइटी हैं और लगभग 5000 सदस्य हैं। वर्तमान में लगभग 30000 लीटर दूध प्रतिदिन पराग द्वारा जनपद में खरीदा/एकत्रित किया जाता है। जनपद में राज्य सरकार के अतिरिक्त पराग के 5 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र भी उपलब्ध हैं ताकि पशुओं की उन्नत नस्लों की कोई समस्या न हो। पराग (पी. सी.डी.एफ) उच्च क्वालिटी का पशु आहार भी उचित मूल्य पर अपने सदस्यों को उलब्ध कराता है ताकि कम लागत में अधिक दुग्ध उत्पादन किया जा सके। मुरादाबाद दुग्ध उत्पादक संघ दलपतपुर प्लांट पर दूध से पाउडर बनाया जाता है। साथ ही कृत्रिम गर्भाधान हेतु उच्च नस्ल के सांडों का ''सीमन कलेक्शन'' करके पूरे राज्य में भेजा जाता है। जनपद में जे0 के0 डेरी ने अपना एक प्लांट गजरौला में स्थापित किया है। जो स्थायी पशुपालकों से दूध खरीदता है। अतः कुल मिलाकर दुग्ध विपणन की जनपद में कोई विशेष समस्या नही हैं।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

एक उद्यम के रूप में एक निश्चित लक्ष्य होना अत्यन्त आवश्यक है ताकि एक निश्चित उत्पादन करके अपने लाभ को अधिकतम रखने का प्रयास कर सके। स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोज़गार योजना के उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु एवं एक लाभप्रद डेयरी उद्यम के लिए यह आवश्यक है कि आरम्भ में लगभग 8 लीटर औसतन दूध देने वाली 4 भैंसों से उद्यम शुरू किए जाए।

आर्थिक मापदण्ड/मान्यताऐं :–

- दुग्ध पशु की औसत आयु 3–6 वर्ष होगी एवं जो खरीदते समय 30 दिन से अधिक की ब्याही हुई न हो।
- दुग्ध पशु/भैंस एक अच्छी/स्थापित नस्ल की होगी, जैसे मुर्रा ना नीली रावी।
- दुग्ध अवधि 270 दिनों की एवं 150 दिन सूखा काल के होंगें।
- पशुओं की दूसरी किस्त 6 महीनों के बाद प्रारम्भ होगी।
- औसत दुग्ध उत्पादन 8 लीटर प्रतिदिन प्रतिपशु होगा।
- औसत दुग्ध मूल्य 10 रू0 प्रति लीटर होगा।
- यहाँ हमारा उद्‌देश्य स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोज़गार योजना के अनुसार तीन वर्षों में एक बी0पी0एल0 परिवार की मासिक आय को रू0 2000/– तक लाना है।

परियोजना लागत **(लागत रू0 में)**

विवरण	मात्रा	दर	कुल लागत
भैंसें	4	13000/–	52000/–
आवास	8′X20′	50 प्रति वर्ग फिट	8000/–
बीमा	3 वर्ष	5.07 प्रतिशत	2434/–
राशन (दों भैंसों के लिए)	60 दिन	38	2280/–
किराया भाड़ा	4 भैंसे	500 प्रति भैंस	2000/–
कुल लागत			66714/–

नोट :– दो–दो भैसों की दो किस्तें छह माह के अन्तराल पर खरीदी जायेंगी ताकि दूध उत्पादन की निरन्तरता बनी रहे एवं आमदनी का स्रोत भी निरन्तर बना रहे।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

—— दुग्ध चक्र ——

(दिनों में)

पशु संख्या	पहला वर्ष		दूसरा वर्ष		तीसरा वर्ष		चौथा वर्ष		पाँचवा वर्ष	
	दुग्ध काल	सूखा काल	दुग्ध काल	सूखा काल	दुग्ध काल	सूखा काल	दुग्ध काल	सूखा काल	दुग्ध काल	सूखा काल
I	250	115	280	85	265	100	215	150	215	150
II	250	115	280	85	265	100	215	150	215	150
III	185	-	215	150	215	150	215	150	260	105
1V	185	-	215	150	215	150	215	150	260	105
Total	**870**	**230**	**990**	**470**	**960**	**500**	**860**	**600**	**950**	**510**

—— आहार व्यय तालिका ——

विवरण	दुग्ध काल (प्रतिपशु/प्रतिदिन)			सूखा काल		
	मात्रा	दर (प्रति कि0)	कुल व्यय	मात्रा	दर (प्रति कि0)	कुल व्यय
हरा चारा	15 kg	Rs. 0.60	9.00	10 kg	Rs. 0.60	6.00
सूखा चारा	08 kg	Rs. 1.00	8.00	05 kg	Rs. 1.00	5.00
खल चूनी	3 kg	Rs. 7.00	21.00	1.5 kg	Rs. 7.00	10.50

नोट :–

1. यहाँ परिवार की महिलाओं द्वारा भी एकत्रित हरे चारे के कारण हरे चारे की दर कम करके आँकी गई है।
2. यहाँ सूखे चारे से तात्पर्य भूसे के अतिरिक्त चरी या अन्य ऐसे चारे से है जो मौसम में आसानी से सस्ते दरों पर उपलब्ध हैं।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

—— व्यय विवरण तालिका ——

विवरण	पहला वर्ष	दूसरा वर्ष	तीसरा वर्ष	चौथा वर्ष	पाँचवा वर्ष
आहार अ– दुग्ध काल ब– सूखा काल	33060-00 4945.00	37620.00 10105.00	36480.00 10750.00	32680.00 12900.00	36100.00 10965.00
बीमा	812.00	812.00	812.00	812.00	812.00
किराया भाडा	2000.00	-	-	-	-
ब्याज़	7670.00	5830.00	3988.00	2148.00	2148.00
चिकित्सा व्यय	600.00	600.00	600.00	600.00	600.00
मूल्य ह्यस–भवन	800.00	800.00	800.00	800.00	800.00
कुल व्यय	49887.00	55767.00	53430.00	49940.00	51425.00

नोटः– चूंकि आय में हमने कटरे/कटिया से होने वाली आय एवं पशुओं के पाँच वर्षों के पश्चात शेष मूल्य को नही लिया है अतः पशुओं के मूल्य ह्यस को भी व्यय में नही दर्शाया गया है।

बैंक से लाभार्थी को लगभग रू0 59000.00 का ऋण 13 प्रतिशत की दर से 50 माह के लिए दर्शाया गया है।

—— आय विवरण तालिका ——

आय विवरण	पहला वर्ष	दूसरा वर्ष	तीसरा वर्ष	चौथा वर्ष	पाँचवा वर्ष
दूध बिक्री द्वारा (दुग्ध काल x दुग्ध उत्पादन प्रति पशु प्रतिदिन x दर)	(870 x 8 x 10) 69600.00	(990 x 8 x 10) 79200.00	(960 x 8 x 10) 76800.00	(860 x 8 x 10) 68800.00	(9500 x 8 x 10) 76000.00
खाद /गोबर	900.00	1200.00	1200.00	1200.00	1200.00
कुल आय	70500.00	80400.00	78000.00	70000.00	93200.00
ब्याज़	7670.00	5830.00	3988.00	2148.00	2148.00
कुल व्यय (देखें व्यय विवरण तालिका)	49887.00	55767.00	53430.00	49940.00	51425.00
शुद्ध आय	**20613.00**	**24633.00**	**24570.00**	**20060.00**	**41775.00**

—— शुद्ध आय ——

पाँच वर्षों में कुल शुद्ध आय :रू0 1,31,651.00

पाँच वर्षों में औसत शुद्ध मासिक आय :रू0 2,194.18

(आर्थिक आंकलन, रूडसेड संस्थान, गाज़ियाबाद के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

लकड़ी फर्नीचर उद्योग

ज्योतिबाफूले नगर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास के साथ–साथ रहन सहन का स्तर भी ऊंचा उठा है। यह देखा गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लकड़ी से फर्नीचर बनाने की कला सदियों से विद्यमान हैं लेकिन सुविधाओं के आभाव में कुशल कारीगर जनपद के कस्बों व शहरों में जाकर मज़दूरी करते हैं। इनके हाथ का बना हुआ फर्नीचर बाज़ार में अच्छे मूल्य पर बिकता है लेकिन इन्हें मज़दूरी के तौर पर मामूली धनराशि ही हाथ लगती है। अगर इन कुशल कारीगरों को आवश्यक सुविधायें प्रदान करके इन्हें अपने ही गाँव में फर्नीचर उद्योग हेतु प्रेरित किया जाए तो निश्चित तौर से राष्ट्रहित में होगा। स्वर्ण जयन्ती रोज़गार रोज़गार योजना में लकड़ी पर आधारित फर्नीचर उद्योग को व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही तरह से विकसित किया जा सकता है।

लकड़ी का फर्नीचर आजकल सामान्य परिवार की आवश्यकता बन गया है। शादी विवाह में दहेज के तौर पर लकड़ी का फर्नीचर अनिवार्य सा हो गया है। अतः इस प्रकार की इकाईयों की देहाती क्षेत्र में काफी आवश्यकता है। इसके अलावा फर्नीचर क्षेत्र में कोई विख्यात ब्राण्ड या कम्पनी विशेष न होने से प्रतिद्वन्दता का स्तर भी काफी कम रहेगा।

परियोजना की रूपरेखा :

स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोज़गार योजना के अनुरूप आय प्राप्त करने हेतु एक स्वरोज़गारी को वर्ष में लगभग 2 लाख रू0 का कारोबार करना होगा, जिसकी रूपरेखा इस प्रकार है :

क्र0 सं0	उत्पाद	बिक्रीदर (रू0)	संख्या	कुल मूल्य (रू0)
1-	सोफासेट	5000	8	40000.00
2-	ड्रेसिंग टेबल	2000	6	12000.00
3-	डायनिंग टेबल	2000	5	10000.00
4-	डबल बेड	5000	5	25000.00
5-	चौखट	800	40	32000.00
6-	सादापल्ला (दरवाज़ा)	1000	20	20000.00
7-	सादामेज़	800	20	16000.00
8-	सादा कुर्सी	200	80	16000.00
9-	बैंच	300	40	12000.00
10-	स्टूल	150	50	7500.00
11-	अन्य छोटे सामान, जैसे मथानी, चारपाई के पाये बैलगाड़ी की मरम्मत			10000.00
12-	अन्य लकड़ी के स्क्रेप का सामान छीलन, बुरादा			
कुल योग				**2,08,000.00**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

निर्माण विधि :–

लकडी कटिंग → साइजिंग → फिटिंग

विपणन हेत प्रस्तत ← पालिशिंग ← फिनिशिंग

अवस्थापना :–

ज्यातिबाफूले नगर जनपद राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है और यहां लकड़ी के फर्नीचर की माँग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। लकड़ी के फर्नीचर के विक्रय की समस्या नहीं है। इसका कच्चा माल (लकड़ी) हापुड़ में उपलब्ध है। साथ ही साथ स्थानीय मार्केट से भी लकड़ी खरीदी जा सकती है। इसमें प्रयोग होने वाला अन्य कच्चा माल, प्लाईबोर्ड, सनमाइका, कीलें, ग्लास आदि सब स्थानीय बाज़ारों में उपलब्ध है। कुल मिलाकर के लकड़ी के फर्नीचर उद्योग के लिये जनपद में अनुकूल परिस्थितियां उपलब्ध है।

प्रशिक्षण :–

लकड़ी के फर्नीचर की डिज़ाइनिंग और मैन्युफेक्चिरिंग के लिये कोई विशेष प्रशिक्षण केन्द्र/संस्थान कार्यरत नहीं है। केवल कुछ हद तक राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में इस उद्यम से सम्बन्धित प्रशिक्षण उपलब्ध है।

स्वरोज़गारी को एस0जे0एस0वाई0 योजना में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने से पूर्व यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उसे लकड़ी का फर्नीचर बनाने की जानकारी/अनुभव हो। गरीबी की रेखा के नीचे बसर करने वाले ग्रामीण परिवारों में इस प्रकार के बेरोज़गार युवा मिल सकते है। जिन्हें इस उद्यम की जानकारी/अनुभव प्राप्त हो।

परियोजना लागतः–

1. भूमि एवं भवन :– 12′X12′ का एक हाल तथा इतनी ही खुली जगह।
2. औज़ार एवं अन्य उपकरण :–

क0 सं0	**औज़ार का नाम**	**मात्रा**	**क़ीमत**
1-	सिकंजा	1	500.00
2-	रन्दे (तीन साइज़ में)	3	500.00
3-	आरी	3	150.00
4-	बर्मा/कमानी	1	150.00
5-	लकड़ी का प्लेटफार्म	1	500.00
6-	लकड़ी का टूल बाक्स	1	500.00
7-	अन्य सहायक औज़ार जैसे – निहानी, बिसौला, चौरसी, चौरसा, कटर, प्लास आदि		700.00
8-	वुड कार्विंग मशीन		27000.00
	कुल स्थायी लागत		**30000.00**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

कार्यशील पूँजी :–

क्र0 सं0	सामग्री	मात्रा	दर	कीमत
1-	लकड़ी, उत्तम	30 घन फुट	650.00	19500.00
2-	लकड़ी मध्यम	100 घन फुट	450.00	45000.00
3-	प्लाई	1500 वर्ग फुट	16.00	24000.00
4-	सनमाइका	1000 वर्ग फुट	18.00	18000.00
5-	मिरर	6 नग	200.00	1200.00
6-	गद्दी सेट	8 सेट	1000.00	8000.00
7-	फेविकॉल	60 किलो	150.00	9000.00
8-	अन्य सामान (कील, पत्ती)			9800.00
कुल योग				**134500.00**

मासिक विविध खर्च :–

1-	बिजली / डीज़ल	350.00
2-	किराया	500.00
3-	ढुलाई	500.00
4-	मज़दूरी	1500.00
	कुल योग	**2850.00**

कुल परियोजना लागत :–

1-	स्थायी पूँजी निवेश	30000.00
2-	कच्चा (मासिक)	11208.00
3-	मासिक विविध खर्च	2850.00
	कुल योग	**44058.00**

कुल व्यय :–

1-	कार्यशील पूँजी (मासिक)	11208.00
2-	मूल्य ह्रास (15%)	375.00
3-	ब्याज़ (13%)	476.00
4-	विविध खर्च (मासिक)	2850.00
	कुल व्यय	**14909.00**

शुद्ध लाभ (रू0)

कुल आय	17333.00
(–) कुल व्यय	14909.00
शुद्ध लाभ	**2427.00**

(आर्थिक आंकलन, रूडसेड संस्थान, गाज़ियाबाद के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

हैण्डलूम उद्योग (वस्त्रोपादन)

ज्योतिबाफूले नगर में अमरोहा व नौगावां सादात हथकरघा उद्योग के मुख्य केन्द्र माने जाते हैं। यहाँ के हथकरघा पर बना सामान देश व विदेश में मशहूर है। वर्तमान में अमरोहा के बने कारपेट टाइप बेड कवर स्वदेशी बाज़ार में अपना अच्छा स्थान बनाये हुये है। हालांकि इन्हें पानीपत में बने 'रंगोली' नामक बेड कवर से प्रतिद्वन्दता का सामना कर पड़ रहा है। फिर भी यहाँ के कुशल कारीगर अपने उत्पाद में कुछ नयापन लाकर अपनी जगह बनाये हुये हैं। यहाँ के कुशल हथकरघा उद्यमियों ने केशमिलॉन धागे को मिलाकर नये उत्पाद बाज़ार में उतारे हैं जिनकी अच्छी मांग है। नौगावां सादात में अधिकतर हथकरघा पर निर्यात हेतु विभिन्न उत्पाद बनाये जाते है। एस0जी0एस0वाई0 में ऐसे कारीगरों को जो गाँव से आकर कस्बों में कारीगर के रूप में काम कर रहे हैं या जिन्होंने स्वयं पहल करके इस उद्यम का अनुभव प्राप्त किया है, को लाभान्वित किया जा सकता है।

उद्यम की रूपरेखा :–

कुशल कारीगर दो कारीगरों की सहायता से तीन लूम लगाकर अपना हथकरघा उद्योग स्थापित करेगा और कारपेट टाइप बैड कवर बनाकर बेचेगा।

उत्पादन लक्ष्य : (प्रतिमाह)

क्र0 सं0	**विवरण**	**सं0**	**वि0मूल्य (रू0)**	**कुल प्राप्ति (रू0)**
1-	डबल बैड कवर (7'X8')	20	610.00	12200.00
2-	सिंगल बैड कवर (7'X4')	40	310.00	12400.00
3-	दीवान बैड कवर (7'X5')	30	410.00	12300.00

उपरोक्त उत्पादन लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए परियोजना लागत निम्न होगी।

(अ) भवन व भूमि : 15'X30' का एक कमरा पर्याप्त है।

(ब) स्थाई लागत :

1-	तीन हैण्डलूम	15000.00
2-	एक बड़ा बक्सा तथा अन्य छोटे औज़ार	1000.00
	कुल योग	**16000.00**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

(स) कच्चा माल

क्र0 सं0	विवरण	सं0	वि0मूल्य (रू0)	कुल प्राप्ति (रू0)
1-	ताना धागा (2–20)	28 कि0ग्रा0	90.35	2530.00
2-	सिंगल बैड कवर (2–6)	71 कि0ग्रा0	60.00	4260.00
3-	केशमिलान	106 कि0ग्रा0	170.00	18020.00
				24810.00

(2) मज़दूरी

2 कारीगर रू0 3000 प्रति कारीगर कुल रू0 6000/–

(3) अन्य खर्चे : (प्रतिमाह)

1-	भवन किराया	500/-
2-	बिजली	100/-
3-	हथकरघों की मरम्मत	100/-
4-	धागों की बरबादी	100/-
5-	कच्चा माल लाना व बना हुआ माल ले जान	200/-
	कुल योग	**1000/-**

कुल परियाजना लागत :

1-	स्थाई लागत	16000/-
2-	कार्यशील लागत (24810+6000+800)	31810/-
	कुल योग	**47810/-**

उत्पादन लागत : (प्रतिमाह)

1-	हथरकरघों व लूम्स पर मूल्यह्यस 15 प्रतिशत की दर से रू0 16000 पर	200/-
2-	कार्यशील पूंजी	31810/-
3-	ब्याज 13 प्रतिशत की दर से रू0 47000 पर	510/-
4-	बीमा 6 प्रतिशत की दर से	240/-
	कुल योग	**32760/-**

शुद्ध मासिक लाभ :–

कुल उत्पादन मूल्य – उत्पादन लागत मूल्य = Rs. 36900 - Rs.32760

= Rs. 4140/-

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

अवस्थापना एवं विपणन :–

अमरोहा व नौगावां सादात में हथकरघा सम्बन्धी सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। यहाँ प इस व्यवसाय से जुड़े व्यापारी देश के कोने–कोने से आते हैं और अपनी पसन्द का उत्पाद बेचने हेतु ले जाते है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में यह व्यवस्था नहीं है। इस ग्रामों के स्वरोज़गारियों को पूर्णतया अमरोहा व नौगावां सादात के बाज़ारों पर निर्भर रहना पड़ेगा। अतः अगर यू0पी0 हैण्डलूम कारपोरेशन लि0 इन भावी स्वरोज़गारियों का विपणन सहायता करे तो अच्छा रहेगा। क्योंकि गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले स्वरोज़गारियों को बाज़ार में संरक्षण के कच्चे माल की आपूर्ति भी महंगी पड़ेगी। अतः अगर यह कार्य एक समूह में किया जावे और कच्चा माल सामूहिक क्रय किया जावे तो सस्ता पड़ेगा। इसके साथ ही सामूहिक विपणन का लाभ भी प्राप्त हो सकता है।

प्रशिक्षण एवं अनुभव :–

स्वरोज़गारी हथकरघा में कुशल एवं अनुभवी होना आवश्यक है। अगर कोई स्वरोज़गारी इस क्षेत्र में पहली बार प्रवेश कर रहा है, तो उसे किसी कुशल कारीगर के साथ लगभग एक वर्ष काम करना पड़ेगा।

(आर्थिक आंकलन, रूडसेड संस्थान, गाज़ियाबाद के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

मूढ़ा बनाना (सरकण्डा के मूढ़े एवं अन्य फर्नीचर)

गढ़ मुक्तेश्वर तिगरी का नाम पवित्र गंगा स्नान के साथ–साथ मूढ़ा बनाने की कला से भी जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से ही जब श्रद्धालु गंगा स्नान से जुड़ी धार्मिक क्रिया कलापों को अपनाकर जीवन यापन करते थे, तब हरिजन परिवारों ने वहां के स्थानीय घास, फूँस कही जाने वाली मूंजघास को अपनी गुज़र बसर का साधन बनाया। इस घास के तने, जिसको सरकड़ा के नाम से जाना जाता है, का प्रयोग करके विभिन्न प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुयें बनायीं जिसमें यहाँ के मूढ़े पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। आज इस उद्यम में लगभग 300 परिवार लगे हुए है। मूढ़े बनाने की कला पीढ़ी दर पीढ़ी पनपती रहती है और आज भी इस कार्य में लगे परिवारों के बच्चे, पिता के साथ काम में हाथ बंटाकर हाथ के दस्तकार बन जाते हैं और धीरे–धीरे अपना उद्यम शुरू कर देतें है। आमतौर पर ये स्वरोज़गार परक पारिवारिक उद्यम है। इसकी उत्पादन लागत में सबसे बड़ा हिस्सा श्रम का होता है। अगर इसे किसी ग्रामीण उद्यमी को अपनाना हो तो उसे कुछ दिन कुशल कारीगर की देखरेख में प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य है। कारीगरों की बढ़ती हुई संख्या ने इस उद्यम को बहुत ज़्यादा कम्पटीटिव बना दिया है और उद्यमी काफी कम मार्जिन पर काम कर रहे हैं।

क्र0 सं0	विवरण	सं0	दर (रू0)	कुल प्राप्ति (रू0)
1-	मूढ़ा कुर्सी टाइप (बड़ा साइज़)	50	150.00	7500.00
2-	मूढ़ा कुर्सी टाइप	200	130.00	2600.00
3-	मूढ़ा गोल (बड़ा साइज़)	50	70.00	3500.00
4-	मूढ़ा गोल (मिडिल साइज़)	100	55.00	5500.00
				42500.00

वैसे तो मूढ़ों की बिक्री पूरे वर्ष होती है लेकिन गंगा मेले के अवसर पर सबसे ज़्यादा विक्रय होता है। बरसात के दिनों में इस व्यवसाय में मंदा आ जाता है।

उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परियोजना लागत निम्न होगी।

(अ) **भवन व भूमि :** बनाने के बाद इन्हें रखने के लिए एक बड़े कमरे का होना ज़रूरी है। साथ में बनाने के लिए खुली जगह भी आवश्यक है। सुचारू रूप से चलाने के लिए 20′X12′ का एक हाल तथा इतनी ही खुली जगह होनी चाहिये।

(ब) **मशीनरी व औज़ार :** मूढ़े बनाने का कार्य हाथ से होता है। इसमें किसी मशीनरी की आवश्यकता नहीं होती। कुछ औज़ार जैसे – खूंटी, हिरन की सींग, कांटा, दराती, फट्टी की आवश्यकता होती है। जिनकी कुल लागत लगभग 2000 रू0 की होगी।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

(स) कच्चा माल : गंगा के किनारे लगे ग्रामों में मूंज के झुन्ड को काटकर इसके तने को मूढ़ा बनाने में, नीचे के हिस्से की पत्तियों, को बान बनाने के उपयोग में लाया जाता है। ये सभी कच्चा माल ग्रामीणों द्वारा काटकर गढ़मुक्तेश्वर में इतवार की पैंठ में खुले रूप से बेचा जाता है। इस उद्यम से जुड़े लोग अपनी ज़रूरत के मुताबिक खरीद करते है। सबसे सस्ता जनवरी व फरवरी में तथा सबसे ज़्यादा महंगा बरसात में मिलता है। औसत कय मूल्य लगभग 20 रू0 सरकंडे का पूला तथा 2 रू0 फूंस का पूला एवं बान 25 रू0 प्रतिकिलों के हिसाब से मिलता है।

क0 सं0	विवरण	सं0	दर (रू0)	कुल प्राप्ति (रू0)
1-	सरकंडे के बन्डल	300	20.00	6000.00
2-	फूंस के बन्डल	300	2.00	600.00
3-	बान	500	25.00	12500.00
4-	साइकिल के पुराने टायर रेक्सीन धागा आदि	प्रतिनग	10.00	4000.00
				23100.00

(स) मज़दूरी : यह श्रम आधारित उद्यम है और 400 मूढ़े प्रतिमाह का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए लगभग 14 मूढ़े रोज़ाना बनाने पड़ेगें, जिसमें लगभग कुशल उद्यमी मालिक को 7 और कारीगर रखने पड़ेगें, जो 2000 रू0 माहवार पर उपलब्ध होंगे अर्थात रू0 14000 का खर्चा आयेगा।

(य) अन्य खर्चे : (प्रतिमाह)

1-	कच्चे माल की ढुलाई	300/-
2-	भवन किराया	1000/-
	कुल योग	**1300/-**

(3) कुल परियोजना लागत :

1-	पूंजी निवेश	2000/-
2-	कच्चा माल	23100/-
3-	मज़दूरी	14000/-
4-	अन्य खर्चे	1300/-
	कुल योग	**40400/-**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

कुल उत्पादन लागत : (प्रतिवर्ष)

1-	कच्चा माल रू0 (23100X12)	277200/-
2-	मज़दूरी	168000/-
3-	अन्य खर्च रू0 (1300X12)	15600/-
4-	मूल्यह्रास 15 प्रतिशत	300/-
5-	ब्याज़ 13 प्रतिशत	4000/-
	कुल योग	**465100/-**

शुद्ध लाभ :–

वार्षिक बिक्री – उत्पादन लागत = Rs. 498000 - Rs.465100

= Rs. 32900/-

अवस्थापना एवं विपणन :–

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यह कार्य सिर्फ गढ़मुक्तेश्वर कस्बे में होता है और यहाँ पर इस उद्यम सम्बन्धी उत्तम सुविधायें हैं। जैसे कच्चे माल के लिए पैंठ, बनाने के लिए कुशल कारीगर और बेचने के लिए गढ़मुक्तेश्वर का नाम। गढ़मुक्तेश्वर का नाम इस उद्यम के लिए इतना प्रसिद्ध है कि लोग इसे ''गढ़ का मूढ़ा'' कहते हैं। लेकिन एस0जी0एस0वाई0 में इस उद्यम को गाँव में स्थापित करवाना है तो निश्चित रूप से हमें यह ध्यान रखना होगा कि सर्वप्रथम हम गढ़मुक्तेश्वर के निकटवर्ती ग्रामों के बेरोज़गार युवाओं को इस उद्यम को अपनाने के लिए प्रेरित करें। अगर राज्य सरकार इन स्वरोज़गारियों को गाज़ियाबाद में विपणन स्थल की व्यवस्था करवा सके तो हितकर होगा।

प्रतिशक्षण :–

मूढ़ा बनाना एक कला है और इसे करके ही सीखा जा सकता है। इसके प्रशिक्षण हेतु उत्तर प्रदेश राज्य में कोई सुविधा नहीं है। हालांकि हरियाणा सरकार ने अपने राज्य में कुछ प्रशिक्षण केन्द्र अवश्य स्थापित किये है। नये उद्यमी को इस कार्य को अपनाने से पहले गढ़मुक्तेश्वर में रहकर किसी कुशल कारीगर के साथ इस कार्य को सीखना पड़ेगा।

(आर्थिक आंकलन, रूडसेड संस्थान, गाज़ियाबाद के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

विभिन्न प्रकार के अचारों का उत्पादन

प्रस्तावना :– जनपद में विभिन्न प्रकार की सब्ज़िया प्रचुर मात्रा पैदा होती है तथा इनका उपयोग कुशल कारीगरों द्वारा विभिन्न प्रकार के अचार निर्मित करने में किया जाता है। जिससे रोज़गार के अवसर प्राप्त होते है।

1–	उत्पादित वस्तु का नाम :	**गाजर, नीबू, आवला आदि का प्रशोधन कर आचार तैयार करना।**
2–	उत्पादन की संक्षिप्त प्रकिया तथा उसका उपयोग	**उपरोक्तानुसार**
3–	अपेक्षित विद्युत भार	**X**
4–	कच्चा माल प्राप्ति का स्रोत	**स्थानीय**
5–	बिक्री की व्यवस्था	**स्थानीय अमरोहा आदि**
6–	कार्यशाला निजी है या किराये पर, तो वार्षिक किराया	**निजी है।**
7–	उपकरण व साज सज्जा	
	1– टब प्लास्टिक/लोहे का तथा अन्य उपकरण	**20000/-**
8–	स्थिर पूंजी	**20000/-**
9–	कच्चा माल (25 कार्य दिवस हेतु)	**80,000/-**
	1– गाजर, नीबू, आवला, साल्ट, खाद्य आयल आदि	
10–	वेतन/मज़दूरी (एक माह हेतु)	
	1– कुशल कारीगर (एक)	**2000/-**
	2– सहायक कारीगर (दो)	**3000/-**
	योग –	**5000/-**
11–	अन्य खर्चे बिजली, पैकिंग आदि	**2000/-**
12–	कार्यशील पूंजी 1 माह हेतु (9+10+11)	**87,000/-**
13–	वार्षिक उत्पादन व्यय	
	कच्चा मालः	**8000x4=3,20,000**
	मज़दूरी, वेतनः	**8000x4=20,000**
	अन्य व्ययः	**2000x4=8,000**
	ह्रास	**5% = 1000**
	ब्याज़	**4% = 4000**
	योग–	**35,300.00**
14–	आय/बिक्री एक वर्ष की	**278000/-**
15–	वार्षिक औसत लाभ	**25000/-**
16–	मासिक औसत आय	**2000/-**

(आर्थिक आंकलन खादी ग्रामोद्योग लखनऊ उ0प्र0 के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

डी0 सी0 फैन

प्रस्तावना :–

डी0सी0 फैन मारूति के आर0 मेचर से डी0 सी0 बैट्री द्वारा संचालित किया जाता है। इसमें ब्लेड किट लगाकर बिजली न रहने पर बैट्री द्वारा कई घण्टे तक हवा के लिए प्रयोग किया जा सकता है। गर्मी के मौसम में इस प्रकार के पंखों की मांग अच्छी होने से काफी लोगों को रोज़गार मिल जाता है। जनपद में इस कार्य हेतु कुशल कारीगर उपलब्ध है।

इस योजना में होने व्यय का विवरण निम्न प्रकार है।

1–	भूमि एवं भवन	निजी/किराये पर
2–	मशीनरी एवं उपकरण	
	हाथ के औज़ार	10,000
3–	कार्यशील पूंजी मासिक	
	1– कच्चा माल – आरमेचर, कापर वायर	12,000
	अन्य सामान कार्बन आदि	500
	योग	**12,500**
4–	श्रमिक व्यय मासिक	
	1– कुशल – एक	3000
	2– अकुशल – एक	2000
	योग	**5,000**
5–	अन्य खर्चे मासिक	
	1– विद्युत व्यय	300
	2– स्टेशनरी आदि	200
	3– यातायात व्यय	500
	योग	**1000**
6–	कार्यशील पूंजी	
	1– कच्चा माल	12,500
	2– श्रमिक व्यय	5000
	3– अन्य व्यय	1000
	योग	**18,500**
7–	योजना की लागत	
	1– भूमि एवं भवन	निजी
	2– मशीनरी	10,000
	3– कार्यशील पूंजी	22000
	योग	**3,200**
8–	उत्पादन लागत	
	1– कार्यशील पूंजी	18500
	2– मशीनरी पर ह्रास 10 प्रतिशत	80
	3– पूंजी पर ब्याज 11 प्रतिशत	500
	योग	**19,080**
9–	मासिक बिक्री 100 पंखे दर 2500/– प्रति पंखा	25000
10–	**लाभ (25000-19080) =**	**5920**

(आर्थिक आंकलन ज़िला उद्योग केन्द्र, ज्योतिबाफूले नगर के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

लकड़ी के खिलौने व वाध यन्त्र

अमरोहा में विभिन्न प्रकार के वाध यन्त्र व खिलौने बनाने का उद्योग स्थानीय रूप से होता है। विशेष कर अमरोहा नगर में ढोलक एवं खिलौनों के निर्माण का कार्य काफी मात्रा में किया जाता है जिसका व्यक्तिगत प्रयासों से विभिन्न देशों को निर्यात भी किया जाता है। वर्तमान में इस उद्योग मे 2000 लोगों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोज़गार मिला हुआ है। इस उद्योग में होने वाले व्यय का विवरण निम्न प्रकार है।

1—	भूमि एवं भवन		निजी
2—	मशीनरी एवं उपकरण		
	लेथ मशीन लकड़ी व हाथ के औज़ार		25,000
3—	कार्यशील पूंजी मासिक		
	1— कच्चा माल — लकड़ी		25,000
4—	श्रमिक व्यय मासिक		
	1— कुशल कारीगर (2000 X 3)		6000
	2— अकुशल — दो (1500 X 2)		3000
		योग	**900**
5—	अन्य खर्चे मासिक		
	1— विद्युत व्यय		500
	2— डाक स्टेशनरी		300
	3— परिवहन व्यय		1200
		योग	**2000**
6—	कुल कार्यशील पूंजी		
	1— कच्चा माल		25,000
	2— श्रमिक व्यय		9000
	3— अन्य व्यय		2000
		योग	**36,000**
7—	उत्पादन लागत		
	1— कार्यशील पूंजी		36,000
	2— मशीनरी पर ह्रास 10 प्रतिशत		250
	3— बिक्री पर कमीशन 8 प्रतिशत		1250
	4— कुल पूंजी विनियोजन पर ब्याज 11 प्रतिशत		600
		योग	**38,100**
8—	योजना की कुल लागत		
	1— भूमि भवन		निजी
	2— मशीनरी		25000
	3— कार्यशील पूंजी		36000
		योग	**61,000**
9—	मासिक बिक्री अनुमानित		42000
10—	**मासिक लाभ**	**(42000-38100) =**	**6900**

(आर्थिक आंकलन ज़िला उद्योग केन्द्र, ज्योतिबाफूले नगर के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

आम निर्मित उत्पादों का उत्पादन

फल तथा सब्ज़ियां हमारे लिए रक्षक खाद्य पदार्थ है। जो स्वादिष्ट, पौष्टिक खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयोग किये जाते है। एक ही मौसम में इसका अधिकाधिक उत्पादन होने के कारण समुचित रूप से इसका उपयोग नहीं हो पाता और उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत भाग बेकार चला जाता है।

ज्योतिबाफूले नगर जनपद में फल संरक्षण उद्योग अल्पविकसित अवस्था में है। जनपद के आसपास एक बड़े भू–भाग पर आम, (लगभग 17000 हैक्टेयर) अमरूद आदि फलों एवं सब्ज़ियों का उत्पादन किया जाता है। परन्तु मौसम में अधिक खपत न होने एवं उत्पादन के बड़े भाग का बेकार चले जाने, किसानों को उनकी उपज का समुचित मूल्य न मिलने आदि से कृषकों को उत्पादन बढ़ाने से प्रोत्साहन नही मिलता। अतः इनका प्रसंस्कृत अथवा अर्धप्रसंस्कृत पदार्थ उद्योग लगाकर तैयार कर विपणन की काफी संभावनाये हैं। जैसे :–

1. क्षेत्र में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग से रोज़गार सृजन।
2. उत्पादन के तीस प्रतिशत तक की क्षति को रोकने में सहायता।
3. लघुय एवं सीमान्त कृषकों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलाना।
4. क्षेत्र का औद्योगिक विकास।

अतः आम के प्रचुर मात्रा में उत्पादन को देखते हुए गृह स्तर के इकाइयों का सृजन किया जा सकता है। जिसके लिए निम्न प्रकार प्रस्ताव है।

भूमि :– स्वयं उपलब्ध करायी जायेगी।

भवन :– एफ0पी0ओ0 मानकों के अनुसार निर्माण कराने हेतु न्यूनतम उत्पादन क्षेत्र 25 मी0, भंडारण कच्चा माल 9 मी0, तैयार माल के भण्डारण हेतु 10 मी0 बनाने हेतु धनराशि। (लगभग 2 लाख रूपये)

उत्पादन प्रतिवर्ष : 25 टन।

अर्धप्रसंस्कृत : 10 टन।

प्रसंस्कृतृ : 15 टन।

अर्धप्रसंस्कृत पदार्थ :– नमक के घोल में आचार बनाने हेतु कच्चे आम के टुकड़े सुरक्षित किये जायेगे। अर्ध प्रसंस्कृत पदार्थों को आवश्यकतानुसार बाज़ार मांग के अनुसार अचार तैयार किया जायेगा।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

प्रतिदिन उत्पादन

आम का स्क्वैश :– आवश्यक सामग्री एवं व्यय

क्र0 सं0	कच्चा माल	मात्रा	दर	धनराशि
1-	आम कच्चा	100 कि0	10.00	1000.00
2-	चीनी	100 कि0	16.00	1600.00
3-	साइट्रिक एसिड	2 कि0	100.00	200.00
4-	बोतल/जार	200 अदद	5.00	1000.00
5-	अन्य व्यय	प्रति बोतल	2.00	400.00
				4200.00

तैयार मात्रा :–

तैयार बड़ी बोतल : 200 x 50 = 10,000/-

आम का आचार :–

1-	आम	100 कि0	10.00	1000.00
2-	नमक	15 कि0	6.00	90.00
3-	हल्दी	2 कि0	80.00	160.00
4-	सौफ, राई, मेथी, मिर्च आदि	6 कि0	-	500.00
5-	तेल	15 ली0	40.00	600.00
6-	जार आदि पर व्यय		-	3000.00
7-	अन्य सामान		-	500.00
				5850.00

तैयार पदार्थ की मात्रा :–

तैयार आचार : 150 x 60 = 9,000/-

आम का जैम :–

1-	आम	100 कि0	15.00	1500.00
2-	चीनी	50 कि0	16.00	800.00
3-	सा0 एसिड	1 कि0	100	100.00
4-	जार	150	6.00	600.00
5-	अन्य व्यय	.	-	500.00
				3500.00

आम की चटनी :–

1-	कच्चा आम	100 कि0	10.00	1000.00
2-	चीनी	50 कि0	16.00	800.00
3-	मसाले, मेवे आदि	.	-	1300.00
4-	जार	150	4.00	600.00
5-	अन्य सामग्री पर व्यय	.	-	300.00
				4000.00

तैयार पदार्थ की मात्रा :– 150 x 40 = 6,000/-

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

पूंजीगत :– व्यय

कच्चा माल प्रतिदिन :–

1-	स्क्वैश	4200/-
2-	आम का आचार	5850/-
3-	आम का जैम	3500/-
4-	आम की चटनी	4000/-
	कुल योग	**17550/-**

श्रम नियोजन :–

1-	कुशल कर्मचारी	एक	3000.00
2-	अर्धकुशल	दो	4000.00
3-	श्रमिक	चार	48000.00
			11800.00

अन्य व्यय :– विद्युत, डाक, स्टेशनरी, परिवहन, विपणन : 5000/-

कार्यशील पूजीः–

1-	कच्चा माल	17550.00
2-	श्रम नियोजन	11800.00
3-	अन्य व्यय	5000.00
		34350.00

उत्पादन व्ययः–

1-	कार्यशील पूंजी	17550.00
2-	मशीनरी ह्रास, नियोजन एवं कमीशन आदि	5000.00
		22550.00

बिक्री का मूल्य :–

1-	आम स्क्वैश	10000/-
2-	आम का आचार	9000/-
3-	आम की चटनी	6000/-
4-	आम का जैम	6000/-
	कुल योग	**31000/-**

अनुमानित लाभः– (बिक्री मूल्य – उत्पादन व्यय)

31000 – 22550 = 8450.00 (प्रतिदिन के समायोजन के फलस्वरूप)

(आर्थिक आंकलन उद्यान विभाग, ज्योतिबाफूले नगर के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

कार्ड बोर्ड बाक्सेस

आज वस्तु/उत्पाद की गुणवत्ता को साथ–साथ उसकी पैकिंग को भी बहुत महत्व दिया जाता है। अनेक बड़ी कम्पनियां मात्र पैकेजिंग पर अपने बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च कर रही हैं। कभी–कभी तो सिर्फ आकर्षण पैकिंग के कारण ही उपभोगता कई वस्तुओं को खरीद लेता है। कार्ड बोर्ड बाक्सेज़ का प्रयोग प्लाटिक, कांच, कास्मेटिक्स, दवाईयों, रेडीमेड वस्त्रों, मिठाई, इलेक्ट्रानिक, विद्युत उपकरणों, बेकरी की उत्पाद आदि की पैकिंग हेतु किया जाता है। इन डिब्बों का आज बहुत बड़ा बाज़ार है कुछ निर्माता उत्पादक अपने उत्पाद, डिज़ाइन आदि के अनुरूप इन डिब्बों पर प्रिटिंग करा लेते है जबकि कुछ सिर्फ रंगीन डिज़ाइन वाला कागज़ चिपकारकर इन्हें प्रयोग में लाते है। इस प्रकार के डिब्बों की मांग बराबर बनी हुई है।

लक्ष्य उत्पादन :–

300 कार्यदिवस प्रतिवर्ष के आधार पर 1,26,000 बाक्स

निर्माण प्रक्रिया :–

कार्ड बोर्ड को पहले कटिंग मशीन में साइज़ के अनुसार काट लिया जाता हैं फिर उसे क्रीजिंग मशीन पर विभिन्न स्थानों पर मोड़ने के निशान लगा दिये जाते है और निशान पर धीरे–धीरे मोड़ लिया जाता है ताकि कार्ड टूटने न पायें इसके बाद लेई या गोंद लगाकर चिपका दिया जाता है।

वित्तीय संरचना :–

1– स्थायी पूंजी

(i) भूमि एवं भवन :– 15 वर्ग मीटर क्षेत्रफल का शेड/दुकार किराये पर प्रतिमाह रू0 1200.00

(ii) मशीन एवं उपकरण :

क्र0 सं0	विवरण	संख्या	धनराशि
1-	क्रीज़िग मशीन (1 हा0पा0 मोटर)	1	15000.00
2-	पेपर कटिंग मशीन (हस्त चलित)	1	8000.00
3-	वायर स्टिपिंग मशीन (विद्युत चलित)	1	15000.00
4-	चाकू, स्केल, डाई आदि		5000.00
5-	स्थापना विद्युतीकरण		4300.00
6-	कार्यालय फर्नीचर एवं अन्य वस्तुए		4000.00
			51300.00

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

2– कार्यशील पूंजी : (प्रतिमाह)

(ii) वेतन एवं मज़दूरी :

क्र0 सं0	विवरण	सं0	दर	कुल वेतन (रू0)
1-	सुपरवाइज़र (बिक्री प्रतिनिधि)	1	2000.00	1800.00
2-	कुशल कारीगर	1	1200.00	1200.00
3-	अर्द्धकुशल	1	850.00	2550.00
				5550.00

(i) कच्चा माल

क्र0 सं0	विवरण	मात्रा	कुल मूल्य (रू0)
1-	कार्ड बोर्ड 2500 कि0ग्रा0	8.75 प्रति	20000.00
2-	रंगीन एवं सादा कागज़	0.75 प्रति नग	7875.00
3-	लेई, गोंद आदि कन्ज़्यूमेवल सामग्री	10.500 नग	1000.00
			30,705.00

(iv) विविध व्यय :–

1-	किराया	1,200/-
2-	बिजली, पानी	500/-
3-	स्टेशनरी व पोस्टेज	150/-
4-	रखरखाव मरम्मत आदि	100/-
5-	यात्रा व्यय	500/-
6-	बिक्री व प्रशासनिक व्यय	2600/-
	कुल योग	**5050/-**

3– कुल कार्यशील पूंजी : (प्रतिमाह)

1-	वेतन एवं मज़दूरी	5550/-
2-	कच्चा माल	30750/-
3-	विविध व्यय	5050/-
	कुल योग	**41,350/-**

4– कुल पूंजी निवेश :–

1-	स्थायी पूंजी	51,300/-
2-	कार्यशील पूंजी	41,350/-
	कुल योग	**92,650/-**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

5– कुल उत्पादन लागत : (वार्षिक)

1-	कार्यशील पूंजी	4,96,200/-
2-	मशीनरी, उपकरणों पर अवमूल्यन 10 प्रतिशत	4300/-
3-	बैंक ऋण पर ब्याज़ (15%)	13643/-
	कुल योग	**5,14,143/-**

6– विक्रय से आय : (प्रतिवर्ष)

कार्ड बोर्ड बाक्सेस 126000 @ 5/- प्रति बाक्स : 630,000.00

7– लाभ प्रतिवर्ष :– (राजस्व – उत्पादन लागत) : 6,30,000 – 5,14,143 = **8450.00**

(आर्थिक आंकलन राज्य नगरीय विकास अभिकरण, लखनऊ, उ0प्र0 के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

सीमेन्ट की जालियां/गमले का निर्माण

वर्तमान में भवन निर्माण हर स्तर के वर्ग एवं क्षेत्र में काफी तेजी से हो रहा है। शहर अथवा ग्रामीण क्षेत्रों में पक्के भवनों का निर्माण हो रहा है। पूर्व के समय में एक कहावत प्रचलित थी कि 'सात पीढ़ी में एक ही पीढ़ी अपना घर बनवाती है।' किन्तु अब यह कहावत सत्य होती नही दिखती। बल्कि सुरक्षा–आराम को देखते हुए निर्माण हर क्षेत्र में हो रहा है। अतः सीमेन्ट की जाली, जिसका प्रयोग भवन/शेड निर्माण में वेन्टीलेशन के लिए होता है। काफी अधिक मांग है। वहीं दूसरी तरफ सीमेन्ट के गमलें आकर्षक एवं मज़बूत होते हैं। अतः कार्यालय/घरों में इसकी काफी मांग है।

निर्माण विधि :

सीमेन्ट की जाली

सीमेन्ट की जाली बनाने के लिए बालू, सीमेन्ट को 4:1 के अनुपात में मिलाकर मिश्रण तैयार कर लेते हैं। लकड़ी के साचों को जले मोबिल से चिकना कर सीमेन्ट के घोल का स्तर देने के बाद तार भर देते है। फिर बालू, सीमेन्ट पेस्ट को बराबर फर्श पर सेट होने के लिए छोड़ देते है। 24 घण्टें बाद उठाकर पुनः पानी की टंकी में क्वायरिंग के लिए रख देते है। पानी में 24 घण्टें क्वयरिंग के पश्चात जाली को निकालकर विक्रय हेतु भेज दिया जाता है।

सीमेन्ट के गमले

सीमेन्ट के गमले तैयार करने के लिए सीमेन्ट–बालू को 4:1 में मिलाकर मिश्रण तैयार करते हैं तथा सांचे पर एक इंच मोटा लेप लगाते हैं तथा इसके ऊपर सीमेन्ट–माजेक के दाने का मिश्रण 2:1 में मिलाकर सीमेंट के घोल के ऊपर लगाकर चिकना करते है फिर उसको 24 घण्टे के लिए सूखने रख देते हैं। फिर क्वारिंग करने के बाद मोजेक की घिसाई करते है। तथा पत्थरों के चमकदार उभरने पर गमले बिकने को तैयार हो जाता है। साधारणतया गमले 12'', 18'' व आकर्षक साइज़ों में तैयार करते है।

600 वर्ग फीट जाली (प्रतिमाह)

12'' के गमले 125

18'' के गमले 125

आकर्षक गमले 075

वित्तीय संरचना

1– स्थायी पूंजी

(i) भूमि एवं भवन : स्वयं का 1200 वर्गफीट खुला स्थान 500 वर्गफीट का कमरा।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

(ii) मशीन एवं उपकरण :

क्र0 सं0	विवरण	संख्या	कुल लागत (रू0)
1-	सीमेन्ट के सांचे	8	2,400.00
2-	गमले के सांचे 12''	5	1,500.00
3-	गमले के सांचे 18''	5	2,000.00
4-	आकर्षक गमलों के सांचे	3	1,500.00
5-	साहूल, फन्टी, कन्नी, फावड़ा, तसली एवं अन्य उपकरण	एक मुश्त	4,000.00
6-	पानी की टंकी 10X10X 3	1 टंकी	10,000.00
7-	फर्नीचर इत्यादि	–	3,000.00
			24,400.00

2– कार्यशील पूंजी (प्रतिमाह) :

(i) कच्चा माल

क्र0 सं0	विवरण	आवश्यकता	कुल लागत (रू0)
1-	सीमेन्ट	100	12,000.00
2-	बालू मौरंग	200 घनफुट	4,000.00
3-	तार	4.00 कुन्तल	2000.00
4-	तेल	-	300.00
5-	मोजेक दाने	-	1000.00
6-	घिसाई की बट्टी 120 नं0 100 नं0	6	720.00
		कुल योग	**20,020.00**
		अथवा	20,000.00

(ii) वेतन एवं मज़दूरी :

क्र0 सं0	विवरण	सं0	वेतन (रू0)
1-	कुशल कारीगर	1	3,600.00
2-	अर्द्धकुशल कारीगर	2	1,600.00
3-	सहायक	2	2,000.00
		कुल योग	**7,200.00**

(iii) उपयोगिता पर व्यय :

1-	विद्युत पर व्यय 1 एच0पी0	290.00
2-	पानी पर व्यय	500.00
	कुल योग	**790.00**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

(iv) विविध व्यय :

1-	स्टेशनरी एवं पोस्टेज	100.00
2-	यातायात व्यय	300.00
3-	अन्य खर्च	200.00
	कुल योग	**600.00**

3– कुल कार्यशील पूंजी :

1-	कच्चा माल	24,400.00
2-	वेतन एवं मज़दूरी	7,200.00
3-	उपयोगिता पर व्यय	790.00
4-	विविध व्यय	600.00
	कुल योग	**32,990.00**
	अथवा	**33,000.00**

4– कुल निवेश :

1-	स्थायी पूंजी	24,400.00
2-	कार्यशील पूंजी	33,000.00
	कुल योग	**57,400.00**

5– कुल उत्पादन लागत (वार्षिक) :

1-	कार्यशील पूंजी	3,99,000.00
2-	अवमूल्यन मशीन/सांचे पर (10%)	1,500.00
3-	बैंक ऋण पर ब्याज़ (15.5%)	8,452.00
	कुल योग	**4,05,952.00**

6– बिक्री राजस्व (वार्षिक)

1– सीमेन्ट की जाली 7200 वर्ग फीट 2,52,000.00 @ 35/- वर्ग फीट

2– गमले 12'' (1500x35/-) 52,500.00

3– गमले 18'' (1500x65/-) 90,500.00

4– आकर्षक गमले (900x100/-) 90,000.00

कुल योग	**4,84,500.00**

7– लाभ :– (बिक्री राजस्व – उत्पादन व्यय) : 4,84,500– 4,05,950 = 78,550.00

8– लाभ :– 6,500,00 प्रतिमाह

(आर्थिक आंकलन राज्य नगरीय विकास अभिकरण, लखनऊ, उ0प्र0 के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

वोल्टेज स्टेबलाइज़र्स के निर्माण हेतु इकाई की योजना

विद्युत के प्रवाह के घटने–बढ़ने से वोल्टेज में उतार–चढ़ाव ''फलक्चुएशन्स'' होना एक आम बात है। वोल्टेज के इस फलक्चुएशन का सर्वाधिक खराब प्रभाव विद्युत उपकरणों जैसे – टेलीवीज़न, फ्रिज, कम्प्यूटर आदि पर पड़ता है तथा कई बार यह फलक्चुएशन इतना अधिक होता है कि संबिन्धत उपकरण परी तरह खराब हो जाता है, जिसे सुधारने पर काफी खर्च हो जाता है। फलक्चुएशन की इस समस्या का सर्वाधिक उपयुक्त हल है – वोल्टेज स्टेबलाइज़र जोकि मुख्य विद्युत सप्लाई से फलक्चुएट को देखते हुए इस की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है तथा इन उत्पादों का भविष्य उज्जवल प्रतीत होता है।

वोल्टेज स्टेबलाइज़र के चार मुख्य तत्व होते है – (1) एक पॉवर ट्रांसफार्मर, जिसमें संवदेनशीलता हेतु सैंकड्रीज़ तथा टैपिंग की व्यवस्था होती है, (2) पी0सी0बी0 जिनमें ट्रांजिस्टर, डायोड तथा केपेसिटर्स आदि तत्व माउंट किए गये हों, (3) वोल्टेज सैंसिग सर्किट तथा 2 पावर रिलेज़ तथा (4) अन्य सहायक तत्व जैसे ऑन एवं ऑफ स्विच, प्लग सहित पी0वी0सी0 केबल, आयरन वोल्ट मीटर, फयूज़ इंडीकेटर लैम्प आदि।

उत्पादन लक्ष्य तथा वार्षिक प्राप्तियां :–

इस इकाई में टी0वी0 फ्रिज तथा वी0सी0आर0 के साथ प्रयुक्त होने वाले वोल्टेज स्टेबीलाइज़र्स का उत्पादन किया जायेगा। वर्ष में 0.25 के0वी0ए0 के 750 तथा 0.50 के0वी0ए0 के 300 स्टेबलाइज़र बनाये जायेंगे, जिनकी क्रमशः 350 एवं 450 रूपये प्रतिनग की दर से बिक्री वर्ष में कुल 397500 रूपये की प्राप्तियां होगी।

इकाई के वित्तीय पहलू :–

1– कार्यस्थल की आवश्यकता :–

इस इकाई की स्थापना के लिए 600 वर्गफीट के कार्यस्थल की आवश्यकता होगी।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

2– मशीनरी तथा उपकरणों की आवश्यकता :–

इस इकाई में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख मशीनरी तथा उपकरण निम्नानुसार होंगे :–

क्र0 सं0	विवरण	मात्रा	कुल लागत (रू0)
1-	बैंच ड्रिलिंग मशीन	1	5000.00
2-	मल्टीमीटर	2	4000.00
3-	ओसिलोस्कोप (10 एम.एच.जेड)	1	12000.00
4-	एल.सी.आर. ब्रिज	1	9000.00
5-	क्वाइल बाईडिंग मशीन	1	5000.00
6-	सिगड़ी (हॉट प्लेट)	1	5000.00
7-	हाई वोल्टेज टेस्टिंग मशीन	1	7000.00
8-	वाट मीटर	1	2000.00
9-	औज़ार सेट	1	5000.00
10-	सोल्डरिंग आयरन, अन्य यंत्र एवं उपकरण तथा फर्नीचर आदि	–	3000.00
	यंत्रों/उपकरणों की कुल लागत		**57000.00**

3– कच्चे माल की लागत :–

इस इकाई में उत्पादित किए जाने वाले स्टेबलाइज़र्स में लगने वाले प्रमुख कच्चे माल हैं – ट्रांसफार्मर, प्लग, सॉकेट, पी.सी.बी. तथा विभिन्न कम्पोनेंटस, रिले, स्क्रू, स्पेयर इन्सुलेशन तथा स्लीविंग्स, वोल्ट मीटर, फाइबर बॉक्स तथा चेसिस तथा पैकिंग मेटेरियल आदि। इस संदर्भ में 0.25 के.वी.ए. क्षमता का स्टेबेलाइज़र बनाने पर औसतन 175 रूपये, का कच्चा माल लगेगा, जबकि 0.50 के.वी.ए. क्षमता का एक स्टेबेलाइज़र बनाने पर औसतन 250 रूपये का कच्चा माल लगेगा। इस प्रकार प्रतिवर्ष 0.25 के.वी.ए. क्षमता के 750 तथा 0.50 के.वी.ए. क्षमता के 300 स्टेबेलाइज़र्स बनाने पर वर्ष भर में कुल 206250 रूपये का कच्चा माल लगेगा। कच्चे माल की मासिक लागत 17190 रूपये होगी।

4– वेतन तथा पारिश्रमिक पर खर्च :– (प्रतिमाह)

क्र0 सं0	विवरण	सं0	वेतन (रू0)
1-	कुशल कारीगर	1	1500.00
2-	अर्द्धकुशल कारीगर	1	1200.00
3-	सहायक/प्रशिक्षु कारीगर	2	1800.00
	कुल देय वेतन/पारिश्रमिक		**4500.00**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

5– उपयोगिताओं पर व्यय :– (प्रतिमाह)

इस इकाई में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख उपयोगिता विद्युत की है जिस पर प्रतिमाह 750 रूपये व्यय होने का अनुमान है।

क–	बीमा किश्त	100/-
ख–	रख रखाव पर खर्च	200/-
ग–	विक्रय प्रोत्साहन पर खर्च	500/-
घ–	यात्रा/परिवहन पर खर्च	500/-
ड़–	अन्य खर्चें	200/-
	कुल योग	**1500/-**

7– कार्यशील पूंजी की कुल लागत :– (प्रतिमाह)

क–	कच्चे माल की लागत	17190/-
ख–	वेतन/पारिश्रमिक पर खर्च	4500/-
ग–	उपयोगिताओं पर खर्च	750/-
घ–	विविध खर्चे	1500/-
ड़–	कार्यस्थल का किराया	800/-
	कुल कार्यशील पूंजी	**3700/-**

8– कुल परियोजना लागत :–

क–	मशीनरी/उपकरणों की लागत	57000/-
ख–	विविध स्थाई सम्पत्तियों, जैसे रैक्स, टेबल, कुर्सी आदि पर खर्च	5000/-
ग–	कार्यशील पूंजी की लागत (एक माह की कार्यशील पूंजी)	24740/-
	कुल परियोजना लागत	**86740/-**

9– कुल उत्पादन लागत :–

क–	वार्षिक कार्यशील पूंजी	296880/-
ख–	मशीनरी/उपकरणों का मूल्य ह्रास (20% वार्षिक ब्याज़ की दर से)	11400/-
ग–	प्रस्तावित बैंक ऋण पर ब्याज़ (15.5% वार्षिक की दर से)	12710/-
	कुल योग	**320990/-**

10– इकाई की लाभप्रदता :–

क–	वार्षिक लाभ	76510/-
ख–	मासिक लाभ	6375/-

(आर्थिक आंकलन राज्य नगरीय विकास अभिकरण, लखनऊ, उ0प्र0 के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

रेडीमेड गारमेन्टस के निर्माण की इकाई

गारेमेन्ट्स का उद्योग भारतीय परिप्रेक्ष्य में आज अपने आप में एक पूर्ण विकसित उद्योग बन चुका है। न केवल देशी बाज़ार में बल्कि अन्तराष्ट्रीय बाज़ार में भी भारतीय उत्पादकों द्वारा उत्पादित रेडीमेउ गारमेन्ट्स की अत्याधिक मांग है। इस उद्योग के उज्जवल भविष्य को देखते हुये फैशन टैक्नोलॉजी, रेडीमेड गारमेन्ट्स आदि से संबन्धित अनेकों प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/कार्यक्रम प्रारंभ किये गये है, विशेषज्ञ संस्थाओं की स्थापना की गयी है।

रेडीमेड गारमेन्ट्स के क्षेत्र में कुछ प्रमुख उत्पाद जो कि अधिक लोकप्रिय होते जा रहे हैं, उनमें प्रमुख हैं – बच्चों के कपड़े, पुरूषों की कमीज़ें तथा लेडीज़ के सलवार सूट, जो इतने लोकप्रिय होते जा रहे हैं कि इस संदर्भ में कुछ वर्षों में विभिन्न शहरों में अनेक बुटिक स्थापित हुये हैं इन बुटिक केन्द्रों पर महिलाओं की अपार भीड़ को देखकर इनकी लोकप्रियता का सहज की अनुमान लगाया जा सकता है। इस संदर्भ में एक बात जो विशेषकर ध्यान देने योग्य है, वह यह कि अधिकतर संदर्भों में सूट की कीमत का डिज़ाइन/पैटर्न पर अधिक निर्भर करता है। इस प्रकार यदि उद्यमी में सृजनशीलता है तथा उसमें ड्रेस डिज़ाइनों के सूट तैयार कर ज़्यादा लाभ प्राप्त कर सकता/सकती है।

निःसन्देह रेडीमेड लेडीज़ सूट्स के लिए व्यापक बाज़ार उपलब्ध है, तथा यदि कोई ऐसा व्यक्ति लेडीज़ सूट्स के निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण करे जिसे ड्रेस डिज़ाइनिंग की कुछ जानकारी हो तो उसकी सफलता की पर्याप्त संभावनायें हो सकती हैं। अपनी दुकान/शोरूम से (कन्साइमेंट के आधार पर) भी उद्यमी को क्रयादेश माध्यम प्राप्त हो सकते हैं इसके साथ–साथ विभिन्न बुटिक के माध्यम से (कन्साइमेंट आधार पर) भी उद्यमी को क्रयादेश प्राप्त हो सकते हैं इसके साथ–साथ विभिन्न प्रदर्शनियों, मेलों, उत्सवों, समारोहों में स्टॉल्स लगाकर भी उद्यमी इन उत्पादों का विपणन कर सकते हैं अपने स्वयं के पास पर्याप्त मात्रा में सूट्स तैयार हो जाने पर वे अपनी स्वयं की सूट्स की ''सेल'' भी लगा सकते है।

दिल्ली पास में होने तथा जनपद के कारीगरों की सृजनशीलता को देखते हुए जनपद जे0पी0 नगर में इस उद्यम के विकास की काफी संभावनायें है।

निर्माण प्रक्रिया :–

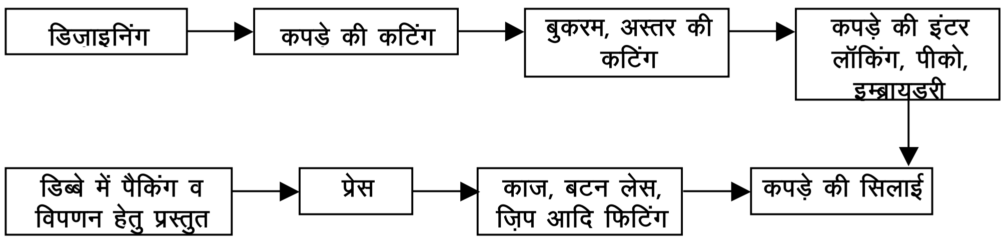

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

इकाई के वित्तीय पहलू :—

1— इकाई की स्थापना हेतु कार्यस्थल/भवन की आवश्यकता :—

इस इकाई की स्थापना हेतु लगभग 1000 वर्गफीट के एक हॉल की आवश्यकता होगी।

2— मशीनरी/उपकरणों तथा अन्य स्थाई संपत्तियों की लागत :—

इस इकाई में उत्पादन कार्य हेतु आवश्यक मशीनरी एवं उपकरणों तथा उन पर आने वाली अनुमानित लागत का विवरण निम्नानुसार है —

क0 सं0	मशीनरी/उपकरण	सं0	दर	कुल लागत (रू0)
1-	पैर से चलने वाली सिलाई मशीन (0.25 हार्स पावर मोटर)	3	3000/-	9000/-
2-	ज़िगज़ेग पीको मशीन (ऊषा फ्लोरा मॉडल) कॉंच, बटन आदि लगाने की सुविधाओं से युक्त	1	6000/-	6000/-
3-	इंटरलॉक मशीन	1	2500/-	2500/-
4-	विद्युत प्रेस	2	500/-	1000/-
5-	कैंची	4	100/-	400/-
6-	हैंगर्स	5	60/- प्रति दर्जन	300/-
7-	इंज टेप	3 नग	10/- प्रति नग	30/-
8-	स्केल एल शेप	3 नग	100/- प्रति नग	300/-
9-	कटिंग टेबल	1	2,800	5600/-
10-	अलमारी/शोकेस	2	2,800/-	5600/-
11-	बैंच	1	300/-	300/-
12-	कुर्सियां	5	200/-	1000/-
		कुल योग		**29,430/-**

3— कच्चे माल की लागत :— (प्रतिमाह)

इकाई में प्रतिमाह निम्नानुसार कच्चे माल की आवश्यकता होगी —

क0 सं0	विवरण	मात्रा	दर	कुल लागत (रू0)
1-	सूती कपड़ा	450 मी0	25/-	11250/-
2-	टैरीकॉट कपड़ा	450 मी0	35/-	15750/-
3-	लिजी—बिजी	450 मी0	40/-	18000/-
4-	स्विस कॉटन	450 मी0	50/-	22500/-
5-	लेस, हुक, शो बटन	—	-	1000/-
6-	धागा	100 रीलें	3/-	300/-
7-	सुइयां (सिलाई की)	20 नग	1/-	20/-
8-	अस्तर	40 मी0	16/-	640/-
9-	बुकरम	25 मी0	14/-	350/-
10-	टेलर्स चॉक	तीन डब्बे	10/-	30/-
11-	पैकिंग बॉक्सेज़	150	5/-	750/-
12-	अन्य कन्ज्यमूमेवल सामग्री जैसे — आयल आदि	—	-	50/-
		कुल योग		**70715/-**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

4– कर्मचारियों एवं कारीगरों को देय वेतन/पारिश्रमिक :– (प्रतिमाह)

क्र0 सं0	विवरण	सं0	वेतन प्रतिमाह	कुल वेतन (रू0)
1-	कटिंग मास्टर	1	2000/-	2000/-
2-	कुशल कारीगर	4	1200/-	4800/-
3-	अकुशल कारीगर	3	800/-	2400/-
	कुल देय वेतन/पारिश्रमिक			**9200/-**

5– उपयोगिता व्यय (प्रतिमाह) :–

इस इकाई में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख उपयोगिताओं (विद्युत पानी एवं ईंधन आदि) पर प्रतिमाह 800/– रूपये का व्यय अनुमानित है।

6– विविध खर्चे (प्रतिमाह) :–

इस इकाई के संचालन से संबंधित विविध खर्चे जैसे– मरम्मत तथा रखरखाव, बीमा, यात्रा व्यय आदि पर प्रतिमाह लगभग 1000/– का व्यय अनुमानित है।

7– कुल कार्यशील पूंजी की लागत (प्रतिमाह) :–

कार्यशील पूंजी की विभिन्न मदों पर होने वाले व्यय का विवरण निम्नानुसार है –

क–	कच्चे माल की लागत	70715/-
ख–	कर्मचारियों/कारीगरों को देय वेतन/पारिश्रमिक	9200/-
ग–	उपयोगिताओं पर खर्च	800/-
घ–	विविध खर्चे	1000/-
ड़–	कार्यस्थल का किराया	1000/-
	कुल कार्यशील पूंजी	**82715/-**
	कार्यशील पूंजी प्रतिदिन	**3309/-**

8– इकाई की कुल परियोजना लागत अथवा इकाई में कुल स्थायी पूंजी निवेश :–

क–	मशीनरी/उपकरणों तथा अन्य स्थायी संपत्तियों की लागत	29430/-
ख–	कार्यशील पूंजी पर व्यय (तीन सप्ताह की कार्यशील पूंजी)	69489/-
	कुल योग	**98919/-**
	अथवा	**99000/-**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com

9– कुल वार्षिक उत्पादन लागत :–

क–	कुल कार्यशील पूंजी	992580/-
ख–	मशीनरी/उपकरणों पर मूल्य ह्रास	2900/-
ग–	प्रस्तावित बैंक ऋण पर ब्याज़	14580/-
	कुल योग	**82715/-**

10– बिक्री से कुल वार्षिक प्राप्तियां :–

इस इकाई में उत्पादित किये जाने वाले विभिन्न कपड़ों (लेडीज़ सूट्स) से प्रतिवर्ष निम्नानुसार प्राप्तियां होंगी –

1-	1080 सूती सूट्स 180 रूपये प्रति सूट की दर से	19,400/-
2-	1080 टैरीकॉट सूट्स 240 रूपये प्रति सूट की दर से	2,59,200/-
3-	1080 स्विज कॉटन सूट्स 325 रूपये प्रति सूट की दर से	3,51,000/-
4-	1080 लिजी बिजी सूट्स 290 रूपये प्रति सूट की दर से	3,13,200/-
	कुल प्राप्तियाँ	**11,17,800/-**

प्रतिफाल उत्पादन लागत – 6.43 रूपयें

11– इकाई की लाभप्रदता :–

क–	वार्षिक लाभ	1,07,740/-
ख–	मासिक लाभ	8,978/-

(आर्थिक आंकलन राज्य नगरीय विकास अभिकरण, लखनऊ, उ0प्र0 के अध्ययनों पर आधारित)

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version www.pdffactory.com